वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में जो कथन सत्य हैं उनके समक्ष 'सत्य' तथा गलत के सामने 'असत्य' शब्द लिखिए—

1. इतिहास आर्थिक वातावरण पर प्रकाश डालता है। ( )
2. इतिहास छात्रों में भावी जीवन के लिए प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है। ( )
3. भारतीय इतिहास के अध्ययन से बालक भारतीय जीवन के ढंग के विकास को समझने में समर्थ हो सकेंगे। ( )
4. इतिहास समाज में मानव के विकास का अध्ययन है। ( )
5. इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करने में सहायक है। ( )
6. इतिहास द्वारा बालकों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है। ( )
7. इतिहास आर्थिक एकता स्थापित करता है। ( )
8. इतिहास का भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में बहुत महत्त्व है। ( )

■■

Scanned with CamScanner

3

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य, प्राप्य उद्देश्य तथा मूल्य

[AIMS, OBJECTIVES AND VALUES OF TEACHING HISTORY]

"The teaching of history in schools should lead to the realization that history is the sutdy of the process of social change and development."

—A Hand-book for History Teachers—NCERT

विषय-प्रवेश
(INTRODUCTION)

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देश्य का ज्ञान होना परमावश्यक है। अतः शिक्षण-कार्य उद्देश्य के अभाव में सुचारु रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में **बी. डी. भाटिया** ने लिखा है—**"उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार-विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।"**

"Without the knowledge of aims, the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination, and the child is like a rudderless vessel which will be driften along some-where ashore." **—B. D. Bhatia**

स्वतः प्रश्न उठता है कि इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं ? परन्तु इनको जानने से पूर्व यह जानना अनिवार्य हो जाता है कि इन उद्देश्यों के निर्धारण का आधार क्या है ?

उद्देश्यों के निर्धारक (Determinants of the Aims)—'शिक्षा' समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयास किया गया है कि समाज के उद्देश्य

Scanned with CamScanner

समाज की भौतिक आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुकूल हो। इसी दृष्टि से समाज में प्रचलित विभिन्न देशों में विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। परन्तु आधुनिक शिक्षा में बालक को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जाता है। इस कारण शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में उनकी आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं आदि का भी ध्यान रखा जाने लगा है। समाज यह निर्धारित करता है कि बालक में क्या परिवर्तन किया जाना चाहिए। शिक्षक यह निर्धारित करता है कि बालक में किस प्रकार परिवर्तन किया जाए। इसलिये शिक्षण द्वारा परिवर्तन ही शैक्षिक उद्देश्य होता है। शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारक समाज, शिक्षक तथा परिवर्तित जीवन मूल्य हैं। समाजी शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में लोकतन्त्रवादिता, राष्ट्रवादिता, अन्तर्राष्ट्रीयता आदि का योग रहता है। परन्तु ये केवल दिशा का निर्धारण करते हैं।

इतिहास शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY)

शैक्षिक शिक्षण के उद्देश्य सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं और शिक्षा के उद्देश्य समय समय पर निर्धारकों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। इसलिये देश में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' ने माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये-

1. व्यक्तित्व-शक्तिक्षमता का विकास।
2. चरित्र का विकास।
3. नागरिकता का विकास।
4. व्यावसायिक कुशलता का विकास।
5. आदर्श निर्धारित आदि।

उक्त सामान्य उद्देश्यों को प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती, परन्तु इतिहास शिक्षण इन उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्त्व सहायक है। यह सत्य है कि इतिहास समाज सम्बन्धी ज्ञान तो नहीं प्रदान करता, परन्तु इसके द्वारा छात्रों में आदर्श चरित्र, नागरिकता के गुणों आदि के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान किया जाता है।

शिक्षा के उद्देश्यों को आधार मानकर हुए विभिन्न कालों में इतिहास शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। [illegible] शिक्षाशास्त्रियों के समय में इतिहास शिक्षण के उद्देश्य स्थानीय वस्तुओं को सुरक्षित रखना तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान प्रदान करना होता था। [illegible] इतिहास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना है। [illegible] के समय में इतिहास शिक्षण के उद्देश्य चरित्र, नागरिकता, राष्ट्रीयता, अन्तर्राष्ट्रीयता आदि के विकास पर बल दिया जाने लगा है। आधुनिक काल में इसका मुख्य उद्देश्य अतीत को समझने में

वर्तमान को स्पष्ट करना था। इसके अतिरिक्त सत्य, देश-देश, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास आदि भी इसके उद्देश्य बने गये।

इस इतिहास शिक्षण के विविध उद्देश्यों का विवेचन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे—

(अ) इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्देश्य।

(ब) इतिहास शिक्षण के मुख्य उद्देश्य।

(अ) इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्देश्य (General Aims of Teaching History)

(1) इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना (To Create Interest for History)—विभिन्न विद्वानों ने इतिहास शिक्षण का उद्देश्य प्रारम्भ से इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करना माना है। एडम शेली (Adam Shelly) का मत है—"हमारी इतिहास में इसलिए रुचि नहीं है कि वह अतीत के गौरव को बताता है, बल्कि इसमें इसलिए रुचि है क्योंकि इसके द्वारा वर्तमान सामाजिक जीवन के विविध स्वरूपों तथा दार्शनिकों का स्पष्टीकरण किया जाता है। स्पष्ट है यह हमें भविष्य के लिये तैयार करने के लिए तैयार करता है।" इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि वह प्रारम्भ में इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत करे। वर्तमान की है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करता है और इस लिये जानने के लिए तत्पर होते हैं। दूसरे कारण इस अतीत को खोज करता है। इस अतीत की खोज इस कारण नहीं करते हैं कि हमें देश काल सम्बन्धी कोई आवश्यकता है वरन् इसलिए करते हैं कि आज के मानव के विचारों एवं कार्यों की जड़ अतीत में निहित है। अतः इतिहास के शिक्षक को बालकों के समक्ष अतीत के इतिहास द्वारा वर्तमान को स्पष्ट करके उनमें इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

(2) वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the Present)—इतिहास शिक्षण का एक उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना है। कार्टर ओलिवर मूलर का मत है, "इतिहास द्वारा हम अपने काल की विशेषताओं का अर्थ समझ सकते हैं। उसी इतिहास को हमें विद्यालयों में पढ़ाना चाहिए जो सामाजिक है, क्योंकि इतिहास हमारे वर्तमान को स्पष्ट करता है।" इतिहास के अध्ययन में सामाजिक अध्ययनों का कोई अर्थ नहीं है। छात्र बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिए अपने सामाजिक वातावरण की अपनी दैनिक परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः अतीत द्वारा इस सामाजिक वातावरण को समझाना प्रारम्भ करता है। इसी कारण इतिहास शिक्षण का उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

(3) सामाजिक प्रवृत्तियों का विकास (Development of Social Tendencies)—इतिहास द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार की सामाजिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो विद्यालयों के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है। इसके अध्ययन से

Scanned with CamScanner

छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों के विकास में बहुत सहायता मिलती है। छात्र इसके द्वारा विभिन्न विवादास्पद प्रश्नों एवं समस्याओं के विषय में अपना स्वतन्त्र निर्णय बनाने में समर्थ हो जाता है। अतः इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना माना गया है।

(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Outlook)—विद्वानों का मत है कि इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिए। उनका मत है कि इसके लिए इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाय जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त छात्रों को निष्पक्षता एवं योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित, वर्गीकृत एवं तुलना करने के योग्य बनाया जाय।

(5) राष्ट्रीय भावना का विकास (Development of National Feeling)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का विकास माना गया है। बहुत-से विद्वान देश-प्रेम की भावना के विकास को इतिहास-शिक्षण का एक मूल्य मानते हैं। वस्तुतः विभिन्न देशों एवं विभिन्न कालों में देश-प्रेम की भावना का विकास इतिहास-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जर्मनी ने अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान इसीलिए प्रदान किया था कि इसके द्वारा छात्रों में देश-भक्ति की भावना का विकास सरलता से किया जा सकता है। इतिहास छात्रों को उनके पूर्वजों की देनों का ज्ञान प्रदान करके उनमें देश-भक्ति की भावना विकसित करता है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding)—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य—छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों को निष्पक्षता तथा सच्चाई के साथ प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जाना आवश्यक है। **सी. पी. हिल** (C. P. Hill) ने लिखा है कि इतिहास-शिक्षक इस विषय का अध्यापन इस प्रकार करे जिससे छात्र 'सत्य' की खोज के लिए तत्पर हो सकें तथा वे विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में समर्थ हो सकें। इस प्रकार के ज्ञान से उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य (Specific Aims of Teaching History)

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों को रखा जा सकता है—

(1) ऐतिहासिक विधि का ज्ञान कराना।

(2) समय-ज्ञान की भावना को विकसित करते हुए स्थान तथा समय में सम्बन्ध स्थापित करना।

(3) मानव-उन्नति का काल-क्रम के अनुसार अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

(4) छात्रों को उन समस्याओं तथा कठिनाइयों से अवगत कराना जो मानव के समक्ष उसके सामाजिक विकास में आयी थीं।

(5) छात्रों को इतिहास का ज्ञान इस प्रकार प्रदान करना जिससे उनमें निम्न प्रकार के भाव उत्पन्न हो सकें—

(i) सूचनाएँ कहाँ और किस प्रकार प्राप्त की जायें ?

(ii) प्रमाणों को किस प्रकार जाँचा जाय ?

(iii) तार्किक निष्कर्ष किस प्रकार निकाले जायें ?

(iv) तथ्यों को किस प्रकार संगठित, विश्लेषित एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।

वर्तमान परिस्थितियों में भारत में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY IN PRESENT CONDITIONS OF INDIA)

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने राष्ट्रीय विकास के लिए धर्म-निरपेक्षता, लोकतन्त्र, समाजवाद तथा शान्ति को निर्देशक सिद्धान्तों (Guiding Principles) के रूप में ग्रहण किया है। इतिहास का अध्ययन करते समय इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना परमावश्यक है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। आजकल इतिहास के अध्यापन और उसकी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में इन स्वीकृत सिद्धान्तों का किसी भी प्रकार से प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इस समय इतिहास के अध्यापन में राजनैतिक इतिहास, युद्धों, संधियों तथा ऐतिहासिक चरित्रों के वर्णन पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि इसके अध्यापन द्वारा सामाजिक विकास की समझदारी पर बल दिया जाएं, क्योंकि इसके माध्यम से छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न की जा सकती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण को व्यापक एवं उदार बनाया जा सकता है। आज साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता तथा धार्मिक कट्टरता एवं धर्मान्धता ने इतिहास के अध्यापन को प्रभावित करके राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक चित्र को धूमिल बना दिया है। साथ ही इन्होंने संकीर्ण भावनाओं को विकसित करने में सहयोग दिया है।

हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है, इसलिए शिक्षा द्वारा उन सार्वजनीन और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों को राष्ट्रीय एकता की ओर ले जा सकें। इसके लिए शिक्षा-क्रम या पाठ्यक्रम (Curriculum) में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियाँ तथा राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित अनिवार्य तत्त्व शामिल किये जायें।

भारत ने विभिन्न देशों में शान्ति और आपसी भाईचारे के लिए सदैव प्रयास किया है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्शों को सँजोया है। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा-व्यवस्था का प्रयास यह होना चाहिए कि नई पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना बढ़े।

Scanned with CamScanner

उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इतिहास-शिक्षण के निम्नलिखित प्राप्य उद्देश्यों (Objectives) पर बल दिया जा सकता है—

(1) छात्रों को यह अनुभूति करायी जाय कि इतिहास सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रिया का अध्ययन है।

(2) छात्रों को आधुनिक समाज, जिसमें वे रह रहे हैं, का ज्ञान प्रदान किया जाय।

(3) छात्रों को देश की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्बलताओं से अवगत कराया जाय। साथ ही उन्हें दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(4) छात्रों में सत्य देश-प्रेम की भावना का विकास किया जाय। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय विरासत (National Heritage) की समझदारी प्रदान की जानी चाहिए। उनको यह बताया जाय कि इस विरासत का विकास किस प्रकार हुआ है। हमने विभिन्न जातियों, धर्मों तथा संस्कृतियों को अपनी विरासत में किस प्रकार मिलाया ?

(5) छात्रों को राष्ट्रीय विरासत के साथ-साथ माननीय विरासत से भी अवगत कराया जाय जिससे उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सके।

(6) छात्रों को भारतीय संस्कृति की विविधता एवं एकता से अवगत कराया जाय।

(7) छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास किया जाय।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
(AIMS OF TEACHING HISTORY AT THE DIFFERENT STAGES OF EDUCATION)

1. प्राइमरी स्तर पर उद्देश्य (Aims at Primary Stage)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विषय का प्रतिपादन करना चाहिए—

(अ) इतिहास के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना। रुचि को जाग्रत करने के लिए अधिक सूचनाएँ प्रदान न की जायें और न इसके मस्तिष्क पर परीक्षा का निरर्थक भार डाला जाय।

(ब) ऐतिहासिक कल्पना जाग्रत करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को कहानियों द्वारा शिक्षण प्रदान करना चाहिए, क्योंकि इस स्तर पर बालक कहानीप्रिय होता है।

(स) छात्रों को इस बात से परिचित कराना कि हमारे प्रतिदिन के जीवन पर अतीत का प्रभाव होता है।

Scanned with CamScanner

(द) छात्रों में समय-ज्ञान को धीरे-धीरे विकसित करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक स्थूल वस्तुओं का उपयोग करें; उदाहरणार्थ—समय-चार्ट, समय-रेखा आदि।

(य) छात्रों में देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना। इस स्तर पर विश्व-इतिहास से भी कहानियाँ ली जायें। उनके शिक्षण से उनमें विश्व-बन्धुत्व के अंकुर उत्पन्न किये जा सकते हैं।

2. जूनियर स्तर पर उद्देश्य (Aims at Junior Stage)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए, यथा—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक प्रेम उत्पन्न करना चाहिए। इसके लिए राजनैतिक इतिहास के स्थान पर सामाजिक इतिहास के अध्ययन पर बल दिया जाय।

(ब) छात्रों को शुद्ध रूप से विचार करने के लिए तत्पर बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य मानसिक शक्तियों को विकसित करना चाहिए।

(स) उनको ऐतिहासिक तथ्यों एवं कार्यों की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(द) इस स्तर पर छात्रों को अतीत के प्रकाश में अधिक से अधिक वर्तमान को समझने के योग्य बनाना। इसके अतिरिक्त उन्हें भविष्य के विषय में भी सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(य) छात्रों में समय-ज्ञान को विकसित करने के लिए अमूर्त साधनों का भी उपयोग करना चाहिए।

(र) छात्रों में सत्य देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकसित किया जाय।

(ल) मानचित्र पर घटनाओं सम्बन्धी स्थलों तथा राज्य-सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को इतिहास का भूगोल से सम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

3. हायर सेकेण्डरी स्तर पर उद्देश्य (Aims at Higher Secondary)—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षण को निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों को तत्पर बनाना चाहिए—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक रुचि को दृढ़ बनाना।

(ब) छात्रों को मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना, अर्थात् उनकी मानसिक शक्तियों को एक मुख्य प्रकार से प्रशिक्षित करना, जिससे उनकी तर्क एवं निर्णय-शक्तियों का पर्याप्त विकास हो सके जिससे वे प्रत्येक तथ्य को तर्क तथा प्रमाणों के आधार पर ही स्वीकार करना सीख जायें।

(स) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों का ज्ञान प्रदान करना जिससे वे अपने देश की विश्व-संस्कृति के लिए प्रदान की गई देनों को समझ सकें।

Scanned with CamScanner

(द) अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की क्षमता उत्पन्न करना तथा उसके भविष्य के आकलन के लिए सामर्थ्य उत्पन्न करना।

(य) विकास के सिद्धान्त से अवगत कराना।

(र) समय-ज्ञान के विकास को दृढ़ बनाना।

(ल) छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।

(व) राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अवगत कराकर उनको स्वयं समस्या हल करने के योग्य बनाना।

(श) मानव सभ्यता के विकास की विशेषताओं से अवगत कराना।

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य
(OBJECTIVES OF HISTORY TEACHING)

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्यों को जानने से पूर्व उद्देश्य तथा प्राप्य-उद्देश्यों का अर्थ एवं अन्तर देखना अनिवार्य है। प्रायः उद्देश्य और प्राप्य-उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थ लगाया जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है। इनके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए पृथक्-पृथक् परिभाषाएँ तथा उनके अन्तर को नीचे दिया जा रहा है—

लक्ष्य या उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Aim)—इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है, **"उद्देश्य पूर्व-निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्ग-दर्शन करता है।"**

"Aim is a foreseen end that gives direction to an activity."
—Carter, V. Good

उद्देश्य में दूरदर्शिता होती है, साथ ही उसमें आदर्शवादिता होती है।

प्राप्य उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Objective)—जब हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं तो उसके लिए हमें जिन छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है, उन्हें उस उद्देश्य के प्राप्य उद्देश्य कहते हैं। प्राप्य उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी. गुड ने लिखा है, **"प्राप्य उद्देश्य वह मानदण्ड या लक्ष्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालय क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।"**

"Objective is a standard or goal to be achieved by the pupil when the work in the school activity is completed." **—Carter, V. Good**

इसके अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हुए गुड ने आगे लिखा है, **"प्राप्य उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा पथ-प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।"**

"Objective is a desired change in the behaviour of pupil as a result of experience directed by school." **—Carter, V. Good**

इस प्रकार प्राप्य उद्देश्य में व्यावहारिकता अधिक होती है। दूसरे, इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षक के कन्धों पर होता है।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य तथा प्राप्य उद्देश्य में अन्तर (Difference between Aim and Objective)—इन दोनों के अन्तर को निम्नांकित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य/लक्ष्य	प्राप्य उद्देश्य
1. उद्देश्य का क्षेत्र व्यापक होता है।	1. प्राप्य उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है।
2. उद्देश्य एक सामान्य कथन है।	2. प्राप्य उद्देश्य एक निश्चित कथन है।
3. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय–कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	3. प्राप्य उद्देश्य लक्ष्य या उद्देश्य की छोटी–छोटी शाखाएँ होती हैं। अतः इनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ विशेष की विषय–वस्तु पर होता है।
4. उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। अतः उसे पूर्ण रूप में प्राप्त करना सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति भी हो सकती है और नहीं भी हो सकती है।	4. प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि इनमें व्यावहारिकता होती है। दूसरे शब्दों में प्राप्य उद्देश्य प्राप्यनीय हैं।
5. यह अनिर्दिष्ट (Vague) होता है।	5. यह विशिष्ट (Specific) होता है।
6. यह कक्षा–कक्ष की शिक्षण–रणनीति (Teaching strategy) का निर्धारण करने में सहायक नहीं है।	6. यह कक्षा–कक्षा की शिक्षा रणनीति को निर्णित करने में सहायता प्रदान करता है।
7. यह सीखने वालों (Learners) को स्पष्ट शिक्षा–निर्देश प्रदान नहीं करता है।	7. यह सीखने वालों या छात्रों को निश्चित एवं स्पष्ट निर्देश प्रदान करता है।

ब्लूम के अनुसार शैक्षिक प्राप्य उद्देश्यों का वर्गीकरण
(BLOOM'S TAXONOMY OF EDUCATIONAL OBJECTIVES)

ब्लूम ने शिक्षण पद्धति में अपने मूल्यांकन उपागम (Evaluation approach) के माध्यम के क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। उसने शिक्षण तथा मूल्यांकन को उद्देश्याधारित (Objective based) बनाने का सफल प्रयास किया। उसने बताया कि शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसमें शैक्षिक प्राप्य उद्देश्य (Educational objectives) अधिगमानुभव (Learning experience) तथा व्यवहार परिवर्तन निहित हैं। उसने शैक्षिक प्राप्य उद्देश्यों का वर्गीकरण किया। उसका वर्गीकरण मानसिक जीवन के तीन मूलभूत पक्षों पर आधारित है—

मानसिक जीवन

- संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive domain)
- भावात्मक पक्ष (Affective domain)
- मनःचालित पक्ष (Psychomotor domain)

Scanned with CamScanner

(अ) संज्ञानात्मक पक्ष या क्षेत्र—इस क्षेत्र में बौद्धिक पक्ष आता है जिसका महत्त्व अधिक माना जा रहा है। इस क्षेत्र में समाहित क्रियाओं को छः वर्गों में विभाजित किया गया है—

(i) ज्ञान (Knowledge)—इसके अन्तर्गत निम्नलिखित क्रियाओं को शामिल किया गया है—

1. विशिष्टताओं का ज्ञान (Knowledge of specifies),
2. पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान (Knowledge of terminology),
3. विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान (Knowledge of specific facts),
4. विशिष्टों से व्यवहार करने के साधनों तथा तरीकों का ज्ञान (Knowledge of ways and means of dealing with specifics),
5. परम्पराओं या अभिसमयों का ज्ञान (Knowledge of conventions),
6. प्रवृत्तियों तथा क्रमों का ज्ञान (Knowledge of trends and sequences),
7. वर्गीकरण तथा श्रेणियों का ज्ञान (Knowledge of classifications and categories),
8. मापदण्डों का ज्ञान (Knowledge of criteria),
9. कार्य-पद्धति का ज्ञान (Knowledge of methodology),
10. नियमों और सामान्यीकरण का ज्ञान (Knowledge of principles and generalizations),
11. सिद्धान्तों तथा संरचनाओं का ज्ञान (Knowledge of theories and structures)।

(ii) अवबोधन (Comprehension)—इसके अन्तर्गत निम्न प्रक्रियाओं को रखा गया है—

1. अनुवाद (Translation),
2. व्याख्या (Interpretation),
3. बाह्यवेशन (Extrapolation)।

(iii) ज्ञानोपयोग या प्रयोग (Application)।

(iv) विश्लेषण (Analysis)—इसमें निम्न को समाहित किया गया है—

1. तत्त्वों का विश्लेषण (Analysis of elements);
2. सम्बन्धों का विश्लेषण (Analysis of relationships),
3. संगठनात्मक सिद्धान्तों का विश्लेषण (Analysis of organizational principles)

(v) संश्लेषण (Synthesis)—इनमें निम्नांकित को रखा गया है—

1. अनुपम या विशिष्ट सम्प्रेषण की उत्पत्ति (Production of unique communication),

Scanned with CamScanner

2. योजना की उत्पत्ति (Production of a plan),
3. अमूर्त सम्बन्धों की व्युत्पत्ति (Derivation of a set of abstract relations)

(vi) मूल्यांकन (Evaluation)—इनमें निम्नलिखित क्रियाओं को रखा गया है—

1. आन्तरिक प्रमाण का आकलन (Judgement in terms of internal evidence)
2. बाह्य मानदण्ड का आकलन (Judgement in terms of external evidence)

उपर्युक्त छः प्रक्रियाओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(i) ज्ञान—यह स्मरण नामक मनोवैज्ञानिक क्रिया पर आधारित है। यह संज्ञानात्मक क्षेत्र में अधिगम के निम्न स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अन्तर्गत सूचनाओं, तथ्यों आदि का प्रत्यास्मरण शामिल है।

(ii) अवबोधन—यह विषय-वस्तु के भाव को ग्रहण करने की योग्यता है। यह अवबोधन का निम्न-स्तर है।

(iii) ज्ञानोपयोग—यह सीखी हुई विषय-वस्तु को नवीन तथा स्कूल परिस्थितियों में प्रयुक्त करने की योग्यता है।

(iv) विश्लेषण—यह किसी सूचना या विषय-वस्तु को विभिन्न अंगों में विभक्त करके, उनमें निहित संगठनात्मक संरचना को समझने की योग्यता है।

(v) संश्लेषण—यह विभिन्न अंगों को एक साथ मिलाकर एक नवीन समग्र को बनाने की योग्यता है।

(vi) मूल्यांकन—यह विषय-वस्तु के महत्त्व का आकलन करने की योग्यता है।

(ब) भावात्मक पक्ष—ब्लूम द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण में भावात्मक पक्ष के अन्तर्गत सम्मिलित उद्देश्यों को निम्नलिखित पाँच स्थूल वर्गों में विभक्त किया गया है—

(i) स्वीकार करना या प्राप्ति, ध्यान देना (Receiving, Attending)—इसके अन्तर्गत निम्नांकित को स्थान दिया गया है—

1. चेतना या अभिज्ञता (Awareness),
2. स्वीकार करने की इच्छा (Willingness to receive),
3. नियन्त्रित अथवा चयनित अवधान या ध्यान (Controlled or selected attention)।

(ii) संवेदनशीलता या अनुक्रिया (Responding)—इसमें निम्नलिखित क्रियाएँ सम्मिलित हैं—

1. संवेदनशील होने की इच्छा या अनुक्रिया की सहमति (Acquiescence in responding)।
2. संवदेनशीलता से सन्तुष्टि (Willingness in respond)।

(iii) मूल्य-निर्धारण (Valuing)—इसके अन्तर्गत निम्नांकित क्रियाओं को स्थान प्राप्त है—

1. मूल्य को स्वीकारना (Acceptance of a value)।

Scanned with CamScanner

2. मूल्य को वरीयता क्रम देना (Preference of a value)।

3. प्रतिबद्धता (Commitment)।

(iv) संगठन या व्यवस्था (Organization)—इसमें निम्नलिखित क्रियाओं को स्थान प्राप्त है—

1. मूल्य का सम्बोधीकरण या प्रत्ययीकरण (Conceptualization of a vlaue)।

2. मूल्य प्रणाली की व्यवस्था करना (Organization of a value system)।

(v) मूल्य का लक्षण-वर्णन (Characterization of a value)—इसमें निम्नलिखित क्रियाओं को स्थान प्राप्त है—

1. सामान्य समुच्चय (Generalized set)।

2. लक्षण-वर्णन (Characterization)।

उपर्युक्त का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(i) स्वीकार करना—यह भावात्मक क्षेत्र का प्रारम्भिक या निम्नतर स्तर है। इसमें सीखने वाला उद्दीपक के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करता है।

(ii) अनुक्रिया—इसके अन्तर्गत अधिक उत्प्रेरणा तथा अवधान में अधिक नियमितता की अपेक्षा की जाती है। व्यावहारिक दृष्टि से इसे अभिरुचि (Interest) कहा जा सकता है।

(iii) मूल्य-निर्धारण—इसके अन्तर्गत व्यवहार की उत्प्रेरणा आती है जो व्यक्ति की किसी मूल्य के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित होती है। इसे 'अभिवृत्ति' (attitude) कहा जा सकता है।

(iv) संगठन या व्यवस्था—व्यक्ति का व्यवहार सामान्यतया किसी एकाकी अभिवृत्ति से उत्प्रेरित न होकर अभिवृत्ति-समूह से होता है। ऐसे समूह के संगठित रूप को व्यवस्था कहते हैं।

(v) मूल्य का लक्षण वर्णन—मूल्यों को निरन्तर आत्मसात् करने से कार्य प्रभावित होते हैं, जब व्यक्ति इस प्रक्रिया से एक ऐसे स्तर पर पहुँच जाता है जिसे जीवन-दर्शन कहने लगते हैं, तो वह लक्षण-वर्णन की स्थिति कहलाती है।

(स) मनःचालित या मनोपेशीय पक्ष—इसके अन्तर्गत नाड़ियों तथा माँसपेशियों का समन्वय शामिल है। ब्लूम के वर्गीकरण में इस पक्ष को पाँच वर्गों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं—

(i) अनुकरण (Imitation)—

(क) आवेग, (ख) प्रकट पुनरावृत्ति।

(ii) हस्तादि प्रयोग या परिचालन (Manipulation)—

(क) निर्देशपालन, (ख) चयन, (ग) स्थिरता।

(iii) सुतथ्यता या शुद्धता (Precision)—

(क) पुनरुत्पादन, (ख) नियन्त्रण।

Scanned with CamScanner

(iv) सन्धिबद्ध करना (Articulation)—

(क) अनुक्रम, (ख) सामंजस्य।

(v) स्वाभाविकरण या नैसर्गीकरण (Naturalization)—

(क) स्वचालन, (ख) आभ्यन्तरीकरण।

ब्लूम के उपर्युक्त वर्गीकरण में इन पक्षों को पृथक्-पृथक् नहीं किया जा सकता है। ये तीनों पक्ष आंशिक रूप से एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य (Objectives of History Teaching)—यहाँ इतिहास-शिक्षण के कुछ प्राप्य-उद्देश्यों का उल्लेख किया जा रहा है। परन्तु यह पूरी सूची नहीं है और न किसी व्यक्ति के लिए इतिहास के सम्पूर्ण प्राप्य-उद्देश्य की सूची बनाना सम्भव है। ये केवल सुझाव मात्र हैं—

1. ज्ञानात्मक प्राप्य उद्देश्य (Knowledge Objective)—इसके अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, धारणाओं, सिद्धान्तों, विचारों, समस्याओं, प्रवृत्तियों, आन्दोलनों आदि का—

(i) प्रत्यास्मरण कर सकेगा।

(ii) मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र आदि का प्रदर्शन कर सकेगा।

(iii) पुनः प्रस्तुतीकरण कर सकेगा।

(iv) पहिचान कर सकेगा।

2. अवबोध प्राप्य उद्देश्य (Understanding Objective)—इसके अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, धारणाओं, गतिविधियों, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि की समझदारी प्राप्त करेगा अर्थात्—

(i) छात्र इनमें विभेद कर सकेगा।

(ii) छात्र उनको वर्गीकृत कर सकेगा।

(iii) छात्र इनकी तुलना कर सकेगा।

(iv) छात्र इनकी विषमताओं को समझ सकेगा।

(v) छात्र महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वहीन, प्रमुख एवं गौण कारणों, प्रभावों, घटनाओं आदि में अन्तर स्पष्ट कर सकेगा।

(vi) छात्र साध्य एवं साधनों, कारण एवं प्रभाव आदि के सम्बन्ध को पहचान सकेगा।

(vii) ऐतिहासिक घटनाओं, प्रवृत्तियों आदि को स्पष्ट करने के लिए कारण प्रस्तुत कर सकेगा।

(viii) अतीत से उदाहरण दे सकेगा।

3. कौशल प्राप्य-उद्देश्य (Skill Objective)—छात्र ऐतिहासिक मानचित्रों, रेखाचित्रों, चित्रों, तालिकाओं, चार्टों आदि में आवश्यक विवरण को—

(i) पहचान सकेगा, (ii) अशुद्धियों को जान सकेगा, (iii) तैयारी कर सकेगा।

Scanned with CamScanner

4. अभिरुचि प्राप्य-उद्देश्य (Interest Objective)—इसके अन्तर्गत छात्र में ऐतिहासिक घटनाओं, संस्थाओं, व्यक्तियों आदि के बारे में जानने तथा अध्ययन करने की रुचि उत्पन्न होगी।

5. अभिवृत्ति प्राप्य-उद्देश्य (Attitude Objective)—इसके अन्तर्गत छात्र में निम्नलिखित अभिवृत्तियाँ विकसित होंगी—

(i) व्यक्तियों, धर्मों, संस्कृतियों आदि के प्रति विधेयात्मक अभिवृत्ति विकसित होगी।

(ii) अतीत के आधार पर समस्याओं के अध्ययन की अभिवृत्ति विकसित होगी।

(iii) ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालने की अभिवृत्ति होगी।

6. प्रयोग प्राप्य-उद्देश्य (Application Objective)—इसके, अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, धारणाओं, घटनाओं, गतिविधियों आदि से सम्बन्धित—

(i) समस्याओं को जान सकेगा, तथा उनसे सम्बन्धित सामग्री का संग्रह कर सकेगा।

(ii) उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण कर सकेगा।

(iii) अनुमान तैयार कर सकेगा।

(iv) सामान्य नियम बना सकेगा।

(v) निष्कर्ष निकाल सकेगा।

(vi) प्रमाणों, तथ्यों तथा सम्मतियों के बीच अन्तर कर सकेगा।

(vii) प्रमाणों तथा तथ्यों का चयन करके उनका परीक्षण कर सकेगा।

इतिहास शिक्षण के मूल्य
(VALUES OF TEACHING HISTORY)

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों एवं प्राप्य उद्देश्यों पर दृष्टिपात करने के उपरान्त यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इतिहास-शिक्षण के मूल्य क्या हैं ? परन्तु इसके मूल्यों को देखने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि उद्देश्य एवं मूल्य में अन्तर क्या है ? इस अन्तर को नीचे स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य एवं मूल्य में अन्तर (Difference between Aims and Values)

उद्देश्य एक चेतनशील तथा क्रियाशील अभिप्राय होता है जो कि सदैव हमारे समक्ष रहता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करना हमारा मुख्य लक्ष्य होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने को लिए हम विभिन्न प्रकार के साधन जुटाते हैं। ये साधन वे मार्ग हैं जिनके द्वारा हम अपने उद्देश्य या विशिष्ट स्थान को प्राप्त करते हैं। इस प्राप्ति के मार्ग में उद्देश्य सदैव हमारे समक्ष बना रहता है। परन्तु मूल्य वह अनुभव या फल है

Scanned with CamScanner

जो कि हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग में प्राप्त होते हैं। उद्देश्य हमारा एक होता है, परन्तु उसकी प्राप्ति में हमें बहुत-से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि हम सदैव अपने उद्देश्य को प्राप्त ही कर लें। कभी-कभी प्राप्ति नहीं भी हो पाती, परन्तु हमें उसकी प्राप्ति के मार्ग में बहुत-से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रकार प्राप्त हुए अनुभव या फल मूल्यों की श्रेणी में रखे जाते हैं। प्रो. घाटे ने अपनी पुस्तक '*Teaching of History*' में इन दोनों शब्दों के अन्तर को एक सुन्दर उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है। घाटे ने लिखा है कि कोलम्बस ने भारत पहुँचने के लिए एक नवीन मार्ग की खोज करना—अपना लक्ष्य निर्धारित किया था, परन्तु कोलम्बस अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सका और इस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में उसने अमरीका की खोज की। इस प्रकार कोलम्बस द्वारा 'अमरीका की खोज' मूल्य की श्रेणी के अन्तर्गत रखी जायेगी, लक्ष्य के अन्तर्गत नहीं।

संक्षेप में, इन दोनों के अन्तर को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य	मूल्य
1. उद्देश्य स्वभावतः दार्शनिक एवं सैद्धान्तिक होते हैं।	1. मूल्य अपनी प्रकृति में व्यावहारिक एवं वास्तविक होते हैं।
2. उद्देश्य का निर्धारण विषय के अध्ययन या अध्यापन से पूर्व किया जाता है।	2. मूल्यों का ज्ञान अध्ययन एवं अध्यापन के बाद होता है।
3. उद्देश्य की प्राप्ति आवश्यक नहीं है।	3. मूल्य सदैव प्राप्त होते हैं।

इतिहास-शिक्षण के मूल्य (Values of Teaching History)—इतिहास-शिक्षण के मूल्य के बारे में एम. रॉलिन (M. Rallin) ने लिखा है—**"मैं बच्चों को सबसे पहले इतिहास पढ़ाने के पक्ष में हूँ, क्योंकि इसमें उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है, मनोरंजन होता है, उनमें समझदारी पैदा होती है तथा उनकी भावनाओं का विकास होता है। साथ ही इतिहास उनके स्मृति पटल पर तथ्यों की बहुलता भी एकत्रित करता है जो उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।"**

इतिहास-शिक्षण के प्रमुख मूल्यों का विवेचन इस प्रकार है, यथा—

1. नैतिक मूल्य (Ethical Values)—पाठ्यक्रम में इतिहास को इस कारण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है कि वह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। इसके अध्ययन से बालक संतों, महात्माओं, सुधारकों, नेताओं तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों के बहुमूल्य विचारों के सम्पर्क में आता है। उनका जीवन छात्रों को उनकी भाँति उत्साही तथा सत्यनिष्ठ बनने के लिए प्रोत्साहन देता है। इसके अतिरिक्त बालक यह जान जाता है कि अन्त में सत्य की विजय होती है—चाहे सत्य-प्रेमी को जीवन में कितने ही कष्ट क्यों न उठाने पड़ें। असत्यता द्वारा पतन ही होता है, इससे भी बालक परिचित हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

इतिहास द्वारा नैतिकता की शिक्षा को प्रदान करने के विरुद्ध निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं—

(अ) सत्यता आदि अच्छे गुणों की विजय सदैव नहीं होती है और बुराई तथा असत्यता का सदैव पतन नहीं होता है। बहुत से अवसरों पर यह देखा गया है कि ईमानदार तथा सत्य-प्रेमी मनुष्य जीवन-भर कष्ट उठाते हैं और अयोग्य तथा मिथ्याभाषी सफलता प्राप्त करते हैं।

(ब) अनुभव एवं निरीक्षण के आधार पर यह देखा गया है कि छात्र सन्तों तथा पवित्र मनुष्यों के कार्यों में कोई रुचि नहीं लेते हैं। वे शूरवीरों के कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं और उनकी पूजा करने लगते हैं। वे इस बात पर कोई ध्यान नहीं देते कि हमारे नायकों में क्या गुण हैं, क्या अवगुण हैं? उनके नायक चाहे कितने ही अवगुण रखते हैं, इसका बिना ध्यान किये वे उसके अनुयायी बन जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि छात्र गुरु नानक या चैतन्य के अध्ययन में कोई रुचि नहीं लेते हैं, वरन् क्रियाशील व्यक्तियों के अध्ययन में अधिक रुचि रखते हैं; जैसे—क्लाइव, तैमूर, बाबर आदि। इस प्रकार के व्यक्तियों के चरित्र उनको सरलतापूर्वक अपनी ओर आकर्षित एवं प्रभावित कर लेते हैं।

(स) इसके विरुद्ध एक यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि महानुभावों के चरित्र विभिन्न जटिलताओं से परिपूर्ण होते हैं। उनके चरित्रों में गुण तथा अवगुण—दोनों विद्यमान होते हैं। यदि केवल उनके गुणों का ही वर्णन किया जाय तो यह अवैज्ञानिक होगा। यदि दोनों का विवरण दिया जाय तो छात्रों में भी अवगुण उत्पन्न होना सम्भव है।

उपर्युक्त तर्क पर्याप्त सशक्त हैं। इनको हम निराधार नहीं कह सकते हैं। इस प्रकार इतिहास-शिक्षण द्वारा दी गई इस नैतिकता की शिक्षा को अनुपयुक्त कहकर हमको इतिहास के अध्यापक के हृदय को दुःखी नहीं करना चाहिए, वरन् उसको यह सुझाव दिया जाय कि वह इतिहास के शिक्षण में इसका प्रत्यक्ष रूप से प्रतिपादन न करके अप्रत्यक्ष रूप से बालकों को शिक्षा दे सकता है। **डॉ. कीटिंग** (Keating) ने कहा है—**"यदि हमें इतिहास के शिक्षण के नैतिक महत्त्व प्राप्त करने हैं तो उसके प्रकरणों का शिक्षण, समस्यात्मक विधि द्वारा किया जाय।"**[1]

2. सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्य (Cultural and Social Values)—इतिहास हमें अपनी वर्तमान संस्कृति को समझने के योग्य बनाता है। वह वर्तमान काल की संस्थाओं तथा दशाओं के उद्गम की विवेचना करता है और इन प्रश्नों का उत्तर देता है, जैसे—कब, कैसे और कहाँ से इन संस्थाओं का उद्गम हुआ। यह हमें अतीत काल के वर्णन द्वारा वर्तमान काल की संस्कृति को स्पष्ट करता है और वह बताता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति की आत्मसात् करने की विशेषता के कारण आज की

1. Quoted by **Ghosh, K.D.**, *Creative Teaching of History*, p.16.

Scanned with CamScanner

संस्कृति इस रूप में हमें प्राप्त हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इतिहास हमारे वर्तमान समाज तथा संस्कृति का स्पष्टीकरण करता है। अतः यह हमें सामाजिक समस्याओं के समझने तथा सुलझाने मे बहुत सहायता प्रदान करता है। आज जब भारत में व्यक्ति भौतिक मूल्यों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपनी संस्कृति में आस्था रखें और अपने सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों को जानें। साथ ही अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति महत्त्व की भावना विकसित करें।

3. अनुशासनात्मक मूल्य (Disciplinary Values)—इतिहास मानसिक शिक्षा के लिए बहुत ही लाभदायक है। इसके द्वारा स्मरण, तर्क तथा कल्पना-शक्ति का विकास होता है। यह कहा जा सकता है कि इतिहास द्वारा जितना मस्तिष्क को शिक्षित किया जा सकता है, उतना शिक्षालय के किसी अन्य विषय से नहीं किया जा सकता। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब बालक स्वयं इतिहास के अध्ययन में तुलना तथा विवेचना करे। इसके अतिरिक्त वह स्वयं तथ्यों के विवेचन के पश्चात् सत्यता का पता लगाये तथा अपनी निर्णय-शक्ति का प्रयोग करे और सिद्धान्तों का निर्धारण करे।

4. सूचनात्मक मूल्य (Informative Values)—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इतिहास सूचनाओं का भण्डार है, जिसके द्वारा छात्र अपनी ज्ञान-पिपासा को तृप्त कर सकता है। इतिहास में बालक अपनी शक्ति तथा अनुभव के आधार पर खोज कर सकता है। इतिहास मानव की—विज्ञान और कला, भाषा तथा साहित्य, सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन, दार्शनिक तथा आर्थिक विकास से सम्बन्धित सभी समस्याओं का हल प्रदान करता है। इतिहास मानव के भविष्य के लिए पथ-प्रदर्शन करता है।

5. राष्ट्रीय मूल्य (Nationalistic Values)—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इतिहास अपने अध्ययन करने वालों में देश-प्रेम तथा देश-भक्ति उत्पन्न करता है। इसी तत्त्व के कारण जर्मन निवासियों ने इतिहास को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था। देश-प्रेम तथा देश-भक्ति का उद्देश्य निर्धारित कर उन्होंने अपने शिक्षालयों में इतिहास-शिक्षण प्रारम्भ किया और इसके द्वारा एक पवित्र आर्य-जाति का सृजन किया। हिटलर ने इसी उद्देश्य से विश्व में इस जाति को सर्वप्रथम स्थान दिया और इसी की सत्ता समस्त विश्व में स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने जर्मन निवासियों के सम्मुख यह सिद्धान्त रखा कि 'मेरा देश, सत्य या असत्य' (My Country right or wrong) इसी की उन्नति हमारा उद्देश्य है। परन्तु इस प्रकार का इतिहास-शिक्षण इतिहास के वैज्ञानिक आधार की जड़ों को खोखला बनाता है। वैज्ञानिक इतिहास सतर्कता के साथ तथ्यों का एकत्रीकरण, आलोचनात्मक तथा असंवेगात्मक तर्कपूर्ण विवेचन चाहता है। यदि 'मेरा देश, सत्य या असत्य' किन्तु एकमात्र देश, इस उद्देश्य से इतिहास का शिक्षण किया जाता है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय भावना को भारी ठेस पहुँचायेगा। इतिहास का उद्देश्य—युक्तिसंगत देश-प्रेम उत्पन्न करना तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को विकसित करना है।

Scanned with CamScanner

6. नागरिक मूल्य (Civic Values)—गार्लिक (Garlick) महोदय का कथन है कि **"इतिहास स्वदेश-प्रेम की भावना को जाग्रत करने का प्रयत्न करता है। यह राष्ट्रीय गर्व को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयास करता है। यही इसका प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।"** यहाँ यह प्रश्न उठता है कि इतिहास का यदि यह उद्देश्य है तो नागरिकशास्त्र को विद्यालय पाठ्यक्रम में एक पृथक् विषय के रूप में क्यों स्थान प्राप्त हुआ ? नागरिकशास्त्र-शिक्षण का प्रमुख ध्येय—अच्छे नागरिक उत्पन्न करना है। जब नागरिकशास्त्र इतिहास का एक अंग था, तब योग्य नागरिक उत्पन्न करना—इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य माना जा सकता था। परन्तु जब वैज्ञानिक और लोकतान्त्रिक प्रवृत्तियों ने नागरिकशास्त्र को एक पृथक् विषय का स्थान प्रदान कर दिया तब इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य योग्य नागरिक उत्पन्न करना नहीं माना जा सकता। इसका शिक्षण योग्य नागरिक उत्पन्न करने में सहयोग प्रदान कर सकता है, क्योंकि इसके द्वारा छात्रों के समक्ष, अतीत में नागरिकों ने अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का किस प्रकार निर्वाह किया ? नागरिकों को राज्य द्वारा क्या सुविधायें प्रदान की गयीं ? आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत करके योग्य नागरिक बनने में सहायता प्रदान की जा सकती है। इतिहास सामाजिक जीवन के धार्मिक, नैतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक अंगों का विवेचन करके जीवन की वास्तविक समस्याओं का ज्ञान कराता है और यह ज्ञान दैनिक नागरिकता के क्षेत्र में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि योग्य नागरिक उत्पन्न करना—इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है, वरन एक मूल्य है।

7. अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य (International Value)—आज के इस द्रुतगति से विकसित जगत में विभिन्न राष्ट्रों के बीच की भौतिक दूरी कम होती जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य मानव के जीवित रहने के लिये आवश्यक हो गया है। यह मूल्य केवल इतिहास द्वारा ही विकसित किया जा सकता है। इतिहास द्वारा मानव में वसुधैव कुटम्बकम् की भावना का विकास किया जा सकता है। साथ ही यह मानव में भ्रातृत्व (Brotherhood of man) की भावना विकसित करता है और यह भी बताता है कि हम सब एक पिता की सन्तान हैं। इस प्रकार इतिहास ईश्वर के पितृत्व (Fatherhood of God) की भावना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आज के औद्योगिक युग में भूमण्डलीकरण (Globalization) तथा उदारीकरण (Liberalization) नामक गुणों के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैश्वीकरण (Globalization) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है। इतिहास विभिन्न राष्ट्रों के इन पक्षों का ज्ञान प्रदान करने में सहायक है।

अन्त में इतिहास के विभिन्न मूल्यों को संक्षेप में निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत कर सकते हैं—

1. इतिहास द्वारा मानव प्रकृति को जगत से अवगत होने का अवसर मिलता है।

Scanned with CamScanner

2. इतिहास विभिन्न परिस्थितियों में एक प्रकार से मानव के कार्यों की झाँकी है।
3. इतिहास से हमें अपनी संस्कृति के विभिन्न रूपों का ज्ञान होता है।
4. इतिहास से हमें अपने समाज के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
5. इतिहास से हमें सभ्यता के क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त होता है।
6. इतिहास ज्ञान का अपार भण्डार है।
7. इतिहास जीवन के अनुभवों की खान है।
8. इतिहास से हमें ज्ञान, मनोरंजन तथा अवबोध प्राप्त होता है। साथ ही यह हमारी भावनाओं के विकास में सहायक है।

अभ्यास-प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. "हमारे हाईस्कूलों में इतिहास-शिक्षण को छात्रों में नागरिक तथा नैतिक भावना को विकसित करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।" इसकी विवेचना कीजिए।
2. मुदालियर कीमशन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं ? इतिहास-शिक्षण द्वारा ये उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किये जा सकते हैं ?
3. माध्यमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ? वर्तमान राजनैतिक, सामजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के सन्दर्भ में उनमें क्या परिवर्तन किए जाने चाहिए ?
4. प्राथमिक, मिडिल एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए और क्यों ?
5. किसी विषय के शिक्षण के उद्देश्यों और मूल्यों में क्या अन्तर है ? मध्यमिक विद्यालय में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों और मूल्यों को संक्षेप में बताइये।
6. हाईस्कूल कक्षाओं में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए। आपकी राय में इतिहास-शिक्षण से इन उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक सम्भव है ?
7. इतिहास के शिक्षक को इतिहास के उद्देश्यों की जानकारी क्यों आवश्यक है ? प्राइमरी स्तर पर इतिहास-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए और क्यों ?
8. 'प्राथमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
9. 'उच्च कक्षाओं में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
10. जूनियर स्तर पर इतिहास-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों का विवेचन कीजिए।

Scanned with CamScanner